

स्पन्दन

भास कोंकणी आवसु आमची। लिपि देवनागरी उडगासु दवराची।।

Date of Publication : 1st NOVEMBER 2015









केरळ कोंकणी अकादमी
कोच्ची

पाँच रुपया



VINOD SWEETS

ANNELI ANGADI

8/1770,KOOVAPPADAM

PHONE:0484-2210755,9400997099



കൂവപ്പാടം-കൊച്ചി-2



100% VEGETARIAN HOMELY FOOD

KOOVAPPADAM-KOCHI-2

मुखेल संपादक
सुरेश ए. शेणै
उप संपादक
पी. मनोहर
कोशाधिकारि
आर. के. प्रकाश
वाँगडी
जी. मोहन राव
न्यायोपदेशक
अड.वी.एन. वसन्त कुमार
प्रचार-प्रसार
टी. आर. सदानन्द भट

Layout by :
K. Santhosh
Mob : 9895212521

मुखचित्र : कोडुङल्लूर "श्री सुधीन्द्र सभा मन्दिर" ए उद्घाटन 23-10-2015 क जल्लें। सभा मन्दिरान्तु दोनी 25-10-15 क चल्किल्लें कोंकणी सांस्कारिक सम्मेळन अनि कला कार्यक्रमाचीं दृश्यें।

लेखनान्तुली मतां त्या त्या बरोवप्याचीं

प्रति - ₹ 5/-
वार्षीक - ₹ 60/-

स्पन्दन

प्रकाशन : केरळ कोंकणी अकादमी, कोच्ची



SPANDAN

Published by :
KERALA KONKANI ACADEMY
8/28, 'Santhery', 1st Floor,
Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road,
Cochin - 682 002. Mobile : 94477 35849
Email : keralakonkaniacademy@gmail.com

खंड : 4 अंक : 11 1937 कार्तिक

संपादकीय

जायते वेळे चर्चा केल्लोलो विषय त। आनिकय आमची आवय भास कोंकणी, कोंकणी भास उल्लोंवचे कोंकणें तसीचि लिपी देवनागरी म्हळेले विषयान्तु काँय ग्राह्य ना म्होणु संगचे एक अभिमान म्हुण लेकचे जन अस्स म्हुण सांगचाक लज्जा करता। कोंकणी एक स्वतन्त्र भाषच न्हयिं ती एकी उल्लोंवची भास मात्र तं म्हळेली तर्का सुमार कालाक आसीली। कोंकणी एक स्वतन्त्र भास म्हुण सिद्ध कोरनु घेंवचाक गोवान्तूयि, केरळ, कर्नाटक राज्यान्तुयि जायते आन्धोळन थांयि चमकीलें। आखेरि कोंकणी एक स्वतन्त्र भास म्हळोलो अंगीकारु मेळ्ळो। कोंकणीन्तूयि इतर भाषेन्तु आसिले वरी साहित्य आसा तसीचि मुक्कारि जातर आसा। जाल्यारि तस्सी न्हयिं म्हुण सांगचाक एक संघडित परिश्रम चमकता की म्हुण संशयु जाता। इलक्ट्रोणिक मीडियान्तु प्रत्येक जावनु केरळान्तु तस्सलो मिथ्या श्रमु चमकता आसा। अनि पुणी मनांतु दवरूक सांगतायि।

मातृभाषा = कोंकणी, लिपी = देवनागरि

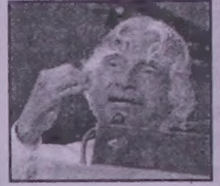
* 26-2-75 -साहित्य अकादमीन,कोंकणी एक स्वतन्त्र भाष म्हळोलो अंगीकारु दिल्लो।
* 4-2-87 - गोवा नियम सभेन गोवाची राज्य भाषा म्हुण कोंकणीक मान्यता दिल्ली।
* 20-8-92 - भारतीय संविधानाचे 8 वें वळेरेंत (Schedule) एकडे कोरनु कोंकणीक अंगीकारु दिल्लो। (अमगेले करन्सी नोटारि इतर भासे ओट्टु कोंकणीनय रुपया मूल्य छापूक प्रारम्भु केल्लो। नोटाचे मूल्य, ऊंचारि थकून सट्टे जावनु कोंकणीन छापला।)

आमका एकच सांगूक आसा की कोंकणी लागी अभिमान वाडोवनु हाडचें आमचे कर्तव्य मात्र तं।

कोच्ची, 01-11-2015

सुरेश ए. शेणै, मुखेल संपादक.

कलामालिं सुवचनँ -



"Be more dedicated to making solid achievements than in running after swift but synthetic happiness"

"क्षणिक अनि कृत्रिम संतोषाचे मगलान वोच्चूनत्तिल्ले दृढ (स्थायी) उपलब्धीक जावनु प्रयत्नु करायि।।"

- अनिता डी. किणी, कोच्ची

मंगळूर - **"श्रीमति विमला वी. पै विश्व कोंकणी पुरस्कार - 2015"**

कविता/ कृति (Poetry) पुरस्कार - आंड्र्यु एल. डिकुन्हा - **"आंजुराचें पान"** (Anthology)

उत्तम पुस्तक (Book) पुरस्कार - मीना एस. काकोद्कार - **"वास्तू"** (कादंबरी)

जीवन सिद्धि (Life time Achievement) सम्मान - सुरेश जी. अमोणकर

"बस्ती वामन शेणै विश्व कोंकणी सेवा पुरस्कार - 2015"

1. ग्रेस पिन्टो 2) डॉ. एच. शान्ताराम

पुरस्कार 2015 नंवबर 6 क मंगळूरान्तु वितरण करतनी म्होणु खबर।

चेरायि 11-10-2015 - कोंकणी साहित्य समाजाचे आभिमुख्यारि वर्ष वर्ष चम्कोवनु एंवचे भाषा सम्मेळन अंदु 'भट निवासान्तु' दवोर्नु चम्कीलें। कोंकणी साहित्यकारि अनि प्रचारक के. के. सुब्रम्हण्यन मास्टराले अनुस्मरण मुख्य कार्यक्रमु अस्सिलो।

15-10-2015 - पणजी - कोंकणी लेखक संघ, गोंय अनि रुद्रा प्रकाशन, गोंय हंगेले संयुक्ताभिमुख्यारि दोन-पावलाचे गोंय आंतरराष्ट्रीय केन्द्रान्तु आयोजित केल्लेले कार्यक्रमान्तु दवोर्नु भारती सुदिन शेणै कुंकळ्येकाराले 'चांदण्यो' अनि 'होवयो' पुस्तकांचे प्रकाशन जल्लें।

एक संतोषाची खबर :- नवंबर 1 धोर्नु एक नवें कोंकणी दिनपत्र गोयान्तु देवचाक साध्यता अस्स म्होणु खबर। सुचारु रूपान चम्कून येत्ताले 'सुनापरान्त' दिनपत्र 28 वर्षा नन्तर 01-08-2015 क रब्बून गेले परान्ते गोयान्तु मस्त चर्चा जल्ली। तज्जे परिणाम स्वरूप तं ह्यें नवें दिनपत्र। गोंयचे एक Local Media Publishing House ह्ये खातीर मुक्कार सर्ला। कोंकणी भाषा मंडलाचे तरपेन एक वर्षाक जाय जल्लेले सहकरण दित्तनि म्होणु संगीले।

संत केशवदासालि हितोपदेश कथा – 8

प्रो. वी. शिवानन्द भट,
पंचाब्जपुरम

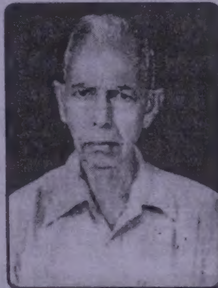
"भगवन्नाम राकता"



राक्षस रावणान श्रीराम पत्नी सीतेक फरली। श्रीरामान वानररायु सुग्रीव अनी पवनपुत्र हनुमन्ताचि मित्रता केली। सीतेक पोरतून हाडचाक श्रीरामाक राक्षसपुरी लंकेन्तु वचाक सुविधा करूक समुद्राचेरि सेतु बंधूक वानरमुख्यानि निश्चय केलो। ताजे खातिर समुद्रान्त घालचाक रूक, शिला अनी पत्थर वानर हाडूक लागले। शिलाखण्डारि अनि पत्थरारि राममंत्र बरौंचें मुख्यप्राणालें मुख्य काम आसलें। जे पत्थरारि 'राम' बरैला कि तो पत्थर सागरजलोपरि पोंवता दिकून सर्वांक आश्चर्य जालें। श्रीराम निज पावन नामाचें सामर्थ्य दाकौंचाक इच्छा करतालो। रामान एक पत्थर काणु उदकान्त विन्दलो। तो उदकान्त बुडलो। रामनाम-युक्त पत्थर मात्र उदकान्त पोंवता। पवनपुत्रान अन्य वानरांक दाकयलें, सर्व हासले। श्रीराम प्रश्नु करता - "हे हनुमान, तूंवें उदकान्त उडौंचो पत्थर पोंवता अनि हाँव उडौंचो बुडता, कशी तें?" हनुमान उत्तर दित्ता - "प्रभो, हांव समुद्रजलान्त उडौंचे शिलाखण्ड अथवा पत्थर मेगेले प्रभावान न्हंय पोंवता, प्रभुनामाचे शक्तीन मात्र पोंवता। प्रभो ! तुमी उडैलेले वस्तूक पोंवचाक शक्ति ना।"

सारांश - देवालो अथवा तारक नामाचो आश्रय मेळोलो पोंवता अनी देवान हातु सोळोलो बुडता। भगवन्नाम स्मरण करचो तरण जाता, विस्मरण करचो नष्ट जाता।

स्मरणाञ्जलि



ए. डी. शेणै
अमरावती,
कोच्ची - 1

05.10.1905 -
21.11.1990
स्वर्गस्थ जावनु
25 वें वर्ष

उडगासु कोरनु :

बायल - एन. माणिक्य बाई
चेर्डुवां - सुरेश ए. शेणै, बेबी वृन्दा, ए. रमेश कुमार, ए. गीता,
उमेश ए. शेणै आनी सुन्नो, जावेंयों
नत्तूराँ, पोण्तूराँ

S.R.V. ENTERPRISES, KOCHI.

सुमनांचें स्मरण - ८

कृष्ण नारायण नायक, कोच्ची

कवासो

"सुमित्रा !" ओत्तमत्तनान अथवा विचित्रकायेन गुड्डे वांकुडे नावांन तिका हग्गगेलींचि अपैतायि जल्यारीयि नांव घालीत लगेन तिका बप्पान उल्दूचें पूर्ण नावांनॅचि। "ओ, इत्ति बप्पा ?" तीणे उल्लो आयकीलो। "वचावे ?" वासर्यान्तु आसिल अम्मालागि सांगून ती आयली। आपीसान्तु थाकून बप्पा साकाण्घडीचि पावल्यारि तिका तसि कोळ मेळतलें। वत्तवत्तां गोपरान्तु पांवु भित्तरि जोळचि पान्जीरीं तीणे सुमार मेजीली। थंगा थंगा जावनु देवळान्तूयि मस्त आसयि। प्रदक्षिणा काणु प्रसादा सोप्यालागि पांवचाकनिक चेम्बान्तु थाकून तीर्थ तिकायि दिलें बप्पायि पिल्लो। तिका मेळेल्यान्तु एकु कवस्या पाकूळे कुट्टूकोयि आसिलो। तो तिका प्रीतिचो, पोरमोळ ती हुंगीतचि राबली। मुखवस्त्र कळें। वाद्य कीर्तन मन्त्र नाद मुग्ध विस्मय वातावरण संजात जालें। बप्पान तिका काणु दाकैलें दिव्य मंगल दर्शन। ती दुसदुस्सेंरि चोयली। देवाक कवस्या पाकुळे नक्षत्र सिंगाल्यीं। चतुर्दशि दर्वोट्यांक भित्तरि वचाकनीक तें लागी दिकून मनांकेल्लेलें तीणे। तिगेले उत्साहा जापेन तें घडींचे कसि म्हुण देवा भडमामानचि तेदूस विवर्सिलें। जीवि कवस्या पाकूळि आयलीना जल्यारि दवरूक भंगराचें आस म्हुणूय जाणैलें। लागून तुळसीकडे गीविन्द घोषाचे आरतीक पांवचाकनिक थांगायि प्रभाळेन्तु कवस्या पाकूळ्यो चन्दायेन सिंगाल्यीयि। मन भर्लें तिजें। दुस्सेरि आरति जांवचाकनिक निवेदा विकूचे माय्यें लागि थाकून बप्पान तिका अप्पे काणु घेवनु दिलें। तें जावनु क्यूवारि प्रसादाक गेलीं। हो भाग्यचि ! तिकायि बप्पाकयि प्रसादान्तु एकेकि कवस्या पाकूळ्योयि मेळ्यो। अम्मागुणीयि-तीणे लेकीलें। तिका निसीम सन्तोष भर्लो-बप्पाक कळें। पर्तून वचे वाटेरि बप्पान तिका केदंकि-कवस्याचें शास्त्र साहित्य विज्ञान महत्व एदेंचि सांगून दिलें। ❁



हस्ति अनि मूंयि

- यु. के.पै, पुत्तूर (कर्नाटका)

सैत्य जावनु हस्ति एक
अक्षी अक्षी सिंकले
भारि पावसु आयलो म्होणु
मूंय्यो पूरा भिल्ले।

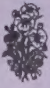
आळें

(കടങ്കഥ/ Riddles)

आर. तारा बाई, कोच्ची

भित्तेरि वत्तसणा पच्चूवें।
भायर एत्तसणा तंबीडें।।

फडिचान खावप



पंचतंत्र कथा



(अथवा नीति शास्त्र)

कथा - १ भागु (इ)

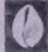
संपादक - जी. पी. कामत, नोयडा

धमनक पिंगलका लगि संगता- "हे राजन! संगता। मस्त काळ फूडे पावसु नत्तिल्यान वृक्ष-लतादि सुकून गेलीं। खाण मेळनत्तिले वनजीवि कष्ट पवतेलीं जल्लीं। एक कोल्लो मस्त दिवस खाण मेळनत्तिले तळवळेन्नु रन्ना मद्धे एक युद्ध भूमीचेरि पवलो। खंवुचाक कांय पुणी मेळतले म्हळ्ळेले मोहान तो थंगा घूवंतासणा एक शब्दु अयकीलो। कसले ते म्होणु चोंवचाक तो कोल्लो शब्दु एवचे दिक्कारि चंवकीलो। युद्ध भूमीरि एक चेण्डे पळ्या। तजे लगि असिले एक सरसे खन्दो वार्यान ते चेण्ड्याचेरि लगतना जवुंचो शब्दु तो म्होणु कोल्याक कळ्ळें। जल्यारि भुक्केन परवश जल्लेले ताणे कसले लेकीने म्हळ्यारि, ते कसलेय मृग जावयात। आज मस्त मांसाहार खावयात। अस्सि लेकून तो चेण्ड्या लगि वोच्चून चेण्ड्या चाम घासु मार्नु फळ्ळें। खवुंचाक मस्त मांस मेळतले म्होणु लेकून ताणे चेण्ड्या भित्तरि मत्तें घल्लें। जल्यारि चेण्ड्या भित्तरि कांय देक्कने। सुक्के चाम आनि रक्कूड मात्रं ! निराशेन कोल्लो घून्नु गेल्लो। ते खत्तीरि अम्मि संगताय, सबाव एकु शब्दु अयकिले खतीरि भीञ्नु रबिल्ले स्थल सोणु वच्चाक नज्ज !"

गुल्लीयो कित्ति



सांगताय - 17



एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची

ग्रहांचें बळ

4. **कालबळ** :- चन्द्रु, कुजु, शनि आदि ग्रह राती समयार बळ घेवंचींय, आदित्यु, गुरु, शुक्रु आदि ग्रह सकाळीं बळ आसुच्चीय तां. केदणाय बळ अस्सुच्चो तां बुधु. कृष्णपक्षांतु पापग्रहांकय शुक्ळपक्षांतु शुभग्रहांकय बळ आसा. वर्षाधिपु, मासाधिपु, वाराधिपु, होराधिपु हांकाय कालबळ आसा.

5. **अयनबळ** :- बुधु, शनि, चन्द्रु हांका दक्षिणायनांतु आनी रवि, कुजु, गुरु, शुक्रु हांका उत्तरायणांतु अयनबळ आसा.

6. **नैसर्गिक बळ**:- शनि, कुजु, बुधु, गुरु, शुक्रु, चन्द्रु, आदित्यु सग ग्रहां क्रमान चडचड नैसर्गिक बळ आसुच्चिं ग्रहां जाव्नु लेकताति.

7. **पक्षबळ**:- शुभ ग्रहांक शुक्ळपक्षाकय पापग्रहां कृष्ण पक्षाकय बळवन्त जात्ताय.

(शेष लगी अंकान्तु)

हांगा पळय, थयं पळय

- विटलराय भट, कारवार

हांगा पळय, थयं पळय
म्हणतात कारवारकार
गोंयगोंयत उलयतात
नाकांतल्यान गोंयकार
कस्सलें म्हाराया ?
म्हणताती कुमटेकार
बाम्मोण गेला पेंटांतु
म्हणतात होन्नावरकार
तावोळचान नेलार पडला
म्हणतात भटकळकार



गुड्डे नांवांचे तोन्द्रव 1 - सुन्दरेशन मास्टर, कोच्ची

एदे काळ जल्ले सग्ग कयरिं संगूचे वेळेरि अम्मि 'गुड्डे नांव' सांगप अस्स। जल्यारि ते खत्तीरि एदे प्रश्नयि जावप अस्स। अंका जल्लेले तसले अनुभव इत्ति सग म्होणु चोव्यां।

एदे काळ फूडे कोतंकुळङ्ङरा जी.एस.बी. बालभद्रा देवी क्षेत्रांतु प्रतिष्ठादिनाघोषु अस्सिलो। तंतु भागु घेवनु पोरतून एवचे वेळेरि हांव पोन्नांबेळुवान्तुले बस स्टोपान्तु भाण्डि रक्कूनु रब्बीलो। तव्वॅळि एकि वृद्ध दम्पति लगेन मेगेले लगि पवलिं। तन्नि, मिज्जेलगि निवंगीलें- "पुत्तो हंगाचे पि.एच.सि. खंतय की ?" हांवे आलोचन केल्लि। मत्तें धुवरेतासरि दिस्सलें। हांवे तंचेलगि संगीलें - "क्षमा पांवका मक्का कळ्ना।" तेद्दे भित्तरि भाण्डि एयलि। हांव तज्जेरि चोळ्ळों। सीटारि बेस्सूनु हांवे आलोचन केल्ली. टेलिविषनाक टी.वी. मणिओरडराक एम. ओ., एयर्कण्डीषणाक ए.सी.,सब ट्रषरी ओफीसाक एस.टी.ओ. तस्सी चारि दिक्कान गुड्डे नांव मात्र। कस्सोलो कालु ? हांव चळ्ळेली भाण्डि चन्दिरूर पवलि। स्टोपान्तु थकूनु एदे जन चळ्ळीं। एकोलो मिज्जे लगि येवनु बेस्सोलो। तो मिगेलो पूर्वकाल सहपाठि अम्मुण्णि तं। अम्मि उडगासु नोवो केल्लो। संभाषणा वेळेरि हांवे निंवगीलें, "अम्मुणी! पी.एच.सी. म्हळ्यारि इत्ति की ?" ताणे संगीले "तूं तुरवूर जंक्षनान्तुल्यान न्हयवें एयलोलो ? थंगा तं ते दिक्कावेले प्रैमरि हेल्त सेन्टर। तज्जे गुड्डे नांव तं पि.एच.सि.।" मक्का लज्जा जल्ली। हांवे तज्जेलगि बसस्टोपान्तु जल्लेलि कयरिं सग्ग संगीलिं। उल्लेयतुल्लेयता बस्स तोप्पुंपडि पावलें। अम्मि देवनु तगतगेले वट्टेन गेल्लीं। ❊

अन्तर्यामि

- विलासिनी एन. नायक, कोच्ची

दिस्ता जीविताक ना कस्सलो अर्थु
अस्सले चिन्तेन्तु जन्मु जत्ता व्यर्थु
मुक्कारि व्होरुक जीवनाचो रथु
जल्लोमू हांव भिझूडु असमर्थु।।

बन्धु-बान्धव सग जत्तायि मू शत्रु
ना ये ये लोकान्तु कोण एकु मित्रु ?
'संसारु' यो सुख दुःखाचो सागरु
पोंयचाक दिस्ता कोण सहायु।।

हा तवळि मन्नान्तु उद्देता चैतन्य
निंगीता, लेक्कीत्तावे तू मक्का अन्य?
कस्सल्यारि दिस्ता तुक्का काठिन्य?
दवर्ल्यारि भक्ति मिज्जेरि अनन्य।।

कोण ना एकलोचि ये जगान्तु
ईश्वरु वासु कर्ता सदा हर्धान्तु
विश्वासु रक्कूचो अम्मि नित्य मनान्तु
आश्वासु दिंचो तो जगदीशु अनन्तु।।

DD 9 - चन्दना : 27-9-2015

संगीता एस. भटकल अनि संगातियानि प्रस्तुत केल्लेले विनायक चतुर्थीचो कार्यक्रमु, 3-10-2015 बंगळूरचे योगीश कुडवा हन्नि म्हळेले स्व. एम. एस. कम्मत्तीन संगीत दिल्लेले कोंकणी गीन्त अस्सिले।

मलबारिन उल्लोंवे अय्किलें दुःख जल्लें !

- उषा आर. भट्ट, कोच्ची

मातृ भास कोंकणी रकुचे खातीर अंगेले अज्जम्मा, बप्पम्मा, मंमम्मा, आवसु आदि स्त्री जनानी केल्लेले योगदान स्तुत्यर्ह तं। घरचे मैदरान्तु, चेर्डाक पवलांचेरि बैसोव्नु वट्टण वर्तना, तेल लयतना, न्हाणेयतना, पोट्टाक लयतना, खेळेयतना, निद्दाव्नु घलतना सग तन्नि म्होण्चि कोंकणी पदँ चेर्डान कोंकणी भास सिक्कूनु काडूकयि भाषेन्तुले नाना पद, तजे यथा योग्य प्रयोग आदि स्वायत्त कोरूकयि व्होडु सहायु जल्लोलो अस्स।

हत्ताचे बोट्टानि मेज्जूयात जल्लेले कोंकणे असचे आन्ध्रा प्रदेश राज्यान्तु, पूर्व गोदावरि जिल्लेन्तु, रामचन्द्रपुरम म्हळेले सान एक गांवान्तु मिग्गेले अव्सूले घरल्याक 1962 न्तु तं मिग्गेलो जन्मु जल्लोलो। 50 वर्ष फूडे हावें सान अस्तना मिग्गेले मंमम्मान म्हळेले पदँ अज्जीयि मिग्गेले मन्नान्तु जिवें अस्स। दोळ्यानीयि, हत्तानीयि, कथागीत रूपान, रागान - धाटीन म्हणचि तीं पदँ, रुचीन अयकूनु चेर्डूवँ रण्णें रब्बोव्नु निद्देतानि। गाय-वसरांक, कयळ्यांक, कीरांक, कुंकडांक, मंकडांक, डुक्करांक सग दक्कोव्नु तन्नि म्हण्चे गीन्त कितले गोड अस्सिले म्होणु संगूक जायना। अयचे चेर्डुवांक तें भाग्य नष्ट जल्यां।

पेरचे पेयरि जल्लेले गोश्रीपुरम तिरुमल देवस्वं आराटाक चंकिल्लि एकि घटना तं यें लेखनाक आधार। समाराधनेक पश्चिम (हंगा केळ्काचो, तेक्काचो, पंजीरयाचो, बडक्काचो गोपुर अस्सि अप्पोंवचे पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर गोपुर म्हळ्यारि कितले चांग अस्तलें) गोपुराचे भित्तरीचि जाव्नु हांवयि बम्मूणूयि फन्तीरि बैसल्लिं। जागो घालनु, बम्मूणु पान दिंचाक थंकीलो। मिज्जे बगलेन 13-15 वर्षाचि दोनि चेल्लीयो बेस्सूनु मलबारीन हस्सूनु-खेळ्नु उल्लेयतालिं। हांवे तंचे लगि कितल्यां सिक्कतायि म्होणु निंवगीलें। "एट्टिल" - जवाब। मलबारि कोळनत्तिल्ले मक्का तें संझलेना। ते चेलियांगेले आव्सु-बप्पूस मुक्कावेले फन्तीक बैसूनु अस्सिल्लीं। तंगेले बप्सून मिज्जेलगि निंवगीलें - "एन्दा" हांवे अंगेले भासेन संगलें - "तुंगेले धुव्वांगेलो परिचयु काडूक हांव तंचेलगि उल्लेयतालि" म्होणु। तन्तु भरसी ते चेलियांगेले हत्तान्तुले मोबैलाचि घांट मारता। तज्जो शब्दु तमिल सिनेमा पदाचो, अर्थु नत्तिल्लो, आवेशु एंचे तराचो गीन्तु, तेंवेयि उच्च स्थायीरि। लगि इतर जनयि अस्सयि, 'ये देवळ तँ', म्होणु कांयि लेक्कान्तु काणु नत्तिल्लें, मोबैलान्तु हस्सूनु खुतखुतेव्नु मलबारीन व्होडि फरडी (वर्तमान)। तेवेंयि कितले व्होडान, कितलो समयु ? खंची की चेड्यालगि तँ ती उल्लोव्नु अस्स म्होणु व्यक्त। कारण, बगलेन बैसल्ले चेल्लेक बोटानि खोंचूनु दोळे मार्नु तं ती उल्लोव्नु

ശുഭാശംസകളോടെ :

കൊങ്കണി സാഹിത്യ അക്കാദമി - കേരള



'വൊളാറു' എന്ന പ്രാചീന കൊങ്കണി നാടോടിഗാനം ശ്രീമതി കലാമണ്ഡലം സുഗന്ധി ചിട്ടപ്പെടുത്തിയ നൃത്തരൂപകമായി ഗോശ്രീ കലാസംഘം (കൊച്ചി) അവതരിപ്പിച്ചു വരുന്നു. 45 മിനിറ്റ് ദൈർഘ്യമുള്ള ഈ കലാരൂപം പ്രോത്സാഹനമർഹിക്കുന്നു. കൂടുതൽ വിവരങ്ങൾക്ക് ബന്ധപ്പെടുക.



ചങ്ങമ്പുഴ കൃഷ്ണപിള്ളയുടെ വാഴക്കുല എന്ന പ്രശസ്ത മലയാള ഖണ്ഡകാവ്യത്തിന്റെ കൊങ്കണി പരിഭാഷ (കേളീഘഡാവ്) ഇപ്പോൾ ലഭ്യമാണ്.

വിവർത്തനം : ശ്രീ.ആർ.എസ്.ഭാസ്കർ ;

ശ്രീ. എം.പി.മനോജ്, ശ്രീ. ദിനേശ് ആർ. ഷേണായി എന്നിവർ വരച്ച ചിത്രങ്ങൾ സഹിതം

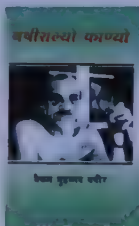
54 പേജ് - വില : 50 രൂപ



ബേപ്പൂർ സുൽത്താൻ എന്നറിയപ്പെടുന്ന വൈക്കം മുഹമ്മദ് ബഷീറിന്റെ ഒമ്പത് ചെറുകഥകൾ മലയാളത്തിൽ നിന്നും കൊങ്കണിയിലേക്ക് പരിഭാഷപ്പെടുത്തിയിരിക്കുന്നു. **ബഷീരാല്യൊ കാണ്യൊ** ഇപ്പോൾ ലഭ്യമാണ്. ജീവിതത്തിന്റെ നിഴൽപ്പാടുകൾ, പൂവമ്പഴം, വിശ്വവിഖ്യാതമായ മൂക്ക്, പാവപ്പെട്ടവരുടെ വേശ്യ, അമ്മ, കൈവിലങ്ങ്, ഐശുകുട്ടി, വിഡ്ഢികളുടെ സ്വർഗ്ഗം, മരണത്തിന്റെ നിഴലിൽ എന്നിവയാണ് ഒമ്പതു കഥകൾ.

വിവർത്തനം : പ്രൊഫ. ആർ.കെ.റാവു ;

144 പേജ് - വില : 140 രൂപ





അഡ്മിനി. ഓഫീസ്:
12 E, സൗപർണിക അപാർട്ട്മെന്റ്സ്,
ടി.ഡി.റോഡ്, എറണാകുളം 682035
ഫോൺ : 9846014376, 9847973039

Kriti

Gateway Enclave

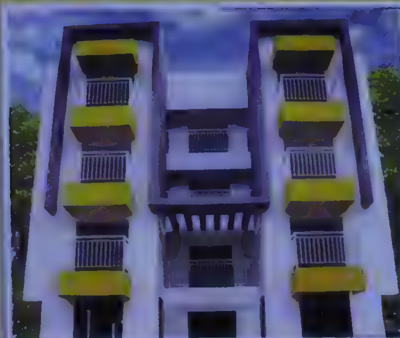
Aroor



2 & 3 BHK Premium Flats

Nearing Possession

Loan Facilities Available





Model Flat

अस्सिल्ली। शासन कोर्का जल्लेंलि, आव्सु-बप्पूसु, जल्यार तंगेले लोकान्तु। अस्सि गेल्यार अंगेले चेल्ले-चेल्लीयो वायट जाव्नु वत्तायि म्होणु विलाप कोर्नु कस्सलें प्रयोजन? वड्डून एंचे मड्या सरसेक घट्टि तण्डूनु मन्दूका जल्लेले वेळारि तें कोर्नु नत्तिल्ले, वड्डून व्होडु मड्डो जाव्नु घरारि बरि जल्ले उपरान्ते पश्चातापु-न्ना-रोणु कस्सलो प्रयोजनु ?

गोश्रीपुरान्तु, भरलेले जनांचे मद्दे, एक अपस्वर लेक्कान मलबारि उल्लोव्चें मोबैलान्तु खेळचे, यें सर्वयि पोळोव्नु तीं खंचे गंची म्होणु हांवे सोद्दि घेत्तलि। तुम्मी खंयि सुकूनु एत्तायि ? तन्नि गावांचे नांव संगीले। मक्का व्होड आश्चर्ययि, दुःखयि जल्ले। आमचे सुमार जन रबचो एकु गांवु। पुण, निंगील्याक सर्वयि मलबारिन जवाब। तंका हांवे कोंकणी उल्लोंचे विचित्र जाव्नु दिस्ता की ? "हंगा कस-कसली रीति पळे; षर्ट, बनियन, पाण्ट सग काणु जांव्का देवळान्तु भित्तरि चोडूक। मोबैल हाडूक नज्ज खंयि, खेळूक नज्ज खंयि अस्सि पूरा म्होणु खेळु कोर्चे रूपान मलबारीन उल्लोंचाक ते मनष्यान प्रारंभु केल्लो। तें अयकूनु मक्का व्होड राग-द्वेषु (कोपु-तापु) अयलो। तंचे लग्गि कस्सि जवाब दींका, तंका सोडूक नज्ज म्होणु हांवे चिन्तन कर्तना, मिजो बम्मूणु पवलो आनि तन्नी मक्का शान्त केल्ली। केरळचे पूरा गांवान्तूयि उणा-ऊणे सें भरी कोंकणी परिवार पुणीयि ओट्टु वासु कोर्नु असतायि। तंका कोंकणी उल्लोंचे ऊणावु खंयि, लज्ज खंयि, यें मक्का व्होड दुःखाक कारण। आलप्पुषा आनि कोल्लम जिल्लेन्तु अंचेगेल्यानि कोंकणी उल्लोंचे ऊणे; तीं घरान्तु सरि मलबारि उल्लेयतायि। ये प्रमाणी मुक्कारि गेल्यार अंगेलि संस्कृति, भाष, संस्कारु, जीवन मूल्य सग खंयि पवतलें ? कोंकणीक सरकारालो कांयि अंगीकारु मेळनात्तिल्ले कालाक, (भारतीय भरण घडनेक 71 वें भेदगति प्रकारि 16-वी भाष जाव्नु, कोंकणी भाषेक अट्टवें पेड्यूळान्तु स्थान मेळनु केवल दोनि दशाब्द तं जल्या।) सेज्जार घरल्याक तेलुगु भास उल्लोंचे रेड्डी, नायिड्डु, कोमटे आदि मनुष्य मात्र अस्सूनु घेवनूयि 400 वर्ष कितलो की अपमानु सहन कोर्नु, कोंकणीक अंगेले मल्घड्यानि रक्कील्यां। अंगेलि संस्कृति-संस्कारु-मूल्य-भाषा ये रकूचे खत्तीरि मात्र तं, जीवु सरि घाण घाल्नु गोवा सोडूनु अंगेले मलघॅडिं धाव्नु एयलेलिं। तंगेलें पाय धूवनु अम्मी उद्काक पींका। कितलि निर्धन, अरूपि, अक्षराभ्यासु नत्तिल्लि जल्यारीयि अंका आव्सु अवसूचि। सेज्जार घरकड्चि चंदि-दुडवाळि बायल मनीषि, आवसु जंना। अंगेलि भाषा, सस्कारु, रकचें अंगेले सर्वालेयि एक विशिष्ट कर्तव्य तं, पूर्विकांलगि अम्मी तिरवांव्का जल्लेले रीण त म्होणु निस्सन्देह संगूयात। ते रीण तिरवांवचाक अंका हात जोड्या, प्रतिज्ञा काड्या। ❋

कर्नाटक-केरळ कोंकणी

- गुरुदत्त एस. प्रभु, कोच्ची

अवकाशु - वेट्टेळु
उरूट - वाडकूळें
आपण - हाँव
गुर्ताचि - वळकीचि
निजान वै - सत्य जाव्नु
मेज्जान वैं - मेज्जो सोपूतु
तुज्जान वैं - तुज्जो सोपूतु
धनी (दर्शनारि) - देवु
अंगलांटु - रूपलावण्य
हक्कु-अवकाशु/अधिकारु

कोंकणी जोड पदां गोंचो

- नागेश आण्वेकार, कारवार

ज्यांटे - नंटे
रीत - रिवाज़
पेज - निश्शें
भाकरि - घाकरि
मांस - मट्टन
कांदो - लोसण
पान - पप्पळ
भेंड - वाजक
नारलु - केळि

गोंय आनी केरळ कोंकणीतलें अंतर

- एन. बालकृष्ण मल्या, कोच्ची

ओतून = ओळ्कून,
(ओत = ओळ्कु, भायर व्होळप)
दुर्मीळ = विरळ / दुर्लभ / दुष्कर
बाळगप=संरक्षण दीवप/व्होड करप
उस्तपाक = सोद्दूक
(उस्तप = सोद्दप;
उस्तून काडप = सोद्दूनु काडप)
व्हडवीक / व्हडविकाय = कीर्ती / प्रशस्ती

ब्रड्ड उपमा

बायलाँ खातिर (ददल्यांकय)

- पत्मजा कामत, दिल्ली

सामग्री

1. ब्रड्ड (डबळ रोटी)	- 250 ग्रां	5. जीरें	- ½ चिपट
2. जीवि मिर्यासांग(चीर्नु)	- 3 - 4	6. हलदी पिट्टी	- 2 ग्रां
3. तेल	- 25 मि.लि.	7. मीट	- आवश्याक
4. ससं	- ½ चिपट		

ब्रड्ड ½ इंच चतुरायेन कुटके कोर्का। पोडग्यान्तु ये कुटके एक-दोनि चिपट तेल/तुप्पान्तु भजूका। कुटिकें निभर जत्तना उझारि थकून खल्ला काडका। अयदनान्तु तेल तप्पोन्तु जीवि सांग, ससं, जीरें, हलदी पिट्टी घालनु फण्ण कोर्नु, ब्रड्डा कुटके तन्तु मेळोंव्का! आवश्याक मीट मेळोन्नु एक पांच मिनिटांक चाळो घालत रबूका! (फण्णान्तु रुचीक अनुसृत सावाळ्या कोच्चोलु मेळयल्यारि चड स्वादिष्ट जत्ता) तय्यार कोर्चो समय- 20-30 मिनिट। संजवेळेरि चाये लग्गी उत्तम।

औषद पंक्ति - 45

अज्जेलीं वोक्कदां

(मुत्तश्शि वैद्यं)

सुशीला टी. भट्, कोच्ची

(किरलो....)

पियवाचें शेक :- मल द्वार मुखाच्यो बिय्यो फुट्टून जायतें रग्गत वोच्चून जाल्यार त्या भागान सूजीय, चांग दुक्कीय आसतलीं. मल विसर्जन करूक चांगी बाधा पडतली. तें शमन कोरचे खातीर तां पियवा शेक. अर्धु मूठ पिय्यावु सपूर कोरनु सिन्दून एक फूट लुगटांत बन्धून पट्टळी (കിഴി) कोरका. एक सनच आयदनांतु (दायंतूय जायत) एद्दे नरलेल घालनु ती पट्टळी बुड्डोवनु उज्जारी हून कोरका. सहन जवंचे हुनसाणीर पट्टळेन मलद्वाराक शेक दीवंका. दिस्साक तीन चार फन्ता आवर्तन करका. चांग शमन मेळता.

(शेष लगी अंकान्तु)



भूमि

- ए. पी. भानुप्रकाश,पच्चाळम,कोच्ची

ना तिका पिशें, ना तिका पिशें
घुंवता ती, घुंवता ती स्वयं
सदा घुंवता ती चोवीस घंटे
घूंवून घूंवून घूंवून
भोंवडी घालता ती आदित्याक
रात्री आनी दीस करता ती
ना तिका पिशें, ना तिका पिशें
तिगेले नांव भूमि, भूमि

*

आत्मीय

'हांव' म्हळ्ळेले कोण म्होणु अन्वेषण/मंथन करायि - रमण महर्षि

घूट (Secret)



- फिलोमिना साँफ्राँसिस्को, मुंबय

दान करपा भाशेन आनीक पुन्य ना. पूण, उजव्या हातान दिल्लें दान दाव्या हाताक कळूंक ना. दिवपांतूच दान करतल्याचें व्हडपण आसा. सकयल दिल्लें काण्येंतल्यान हें सिद्ध जातलें.

एका ल्हानश्या घरांत जाणटीं घोव-वायल रावतालीं. समाधानान आपले दीस एका मेकाच्या मोगान सारतालीं. कोंबयो पोसून तांतयां विखप आनी बोकड्यो पोसून दूद विखप, होच तांचो धंदो आसलो. बरी विखरी जातल्यान, तांचे लागीं दूडू खूप एकटोवतालेत. फूंकट मात ताणीं केन्ना एक तांती (Egg) कोणाक दिलें ना. सोयर्यांनी लेगीत मागल्यार "दूडू दिवन तुमकां जाय तें व्हरात", हिच तांची सगळ्यांक जाप आसली. सगट तांकां इमटीं, कंजूस आनी अशीं जायतीं नांवां दवरतालो आनी तांच्यो गांवभर खवरो करतालो. पुण, ह्यां खवरांचो ते घोव-वायलेचेर एक कुसकुटाचो लेगीत परिणाम जायनासलो. तीं आपलो धंदो करून, दुडु कमावून खोशाल जियेतालीं.

अशेंच दीस सरलेंत, वर्सां धांवली, आनी एक दीस ते जाणटे वायलेन संवसाराक आपले दोळे धांपलेत. कांय दिसांनी घोवानूय ह्या संवसाराचो निरोप घेतलो. तेन्नाच लोकांक ह्या घोव-वायलेचो घूट उगटो जालो. ताणीं इमटेपणान जमयल्लो एक-एक पयसो एका व्हड कामा पासत वापूडलेलो. तांच्या इमटेपणान एकटायल्ल्या दुडवांकूच लागून गांवचे दोन विद्यार्थी आपलें शिक्षण घेंऊक शकलेले; बरें नांव जोडून गांवांक अभिमान हाडलोलो.

दुसर्याच्या करण्यांक आमी वोट दाखंवचें न्हय; गयर समज करून घेंवचो न्हय. दुसर्याक वोट दाखयतना, उरलेलीं वोटां आमी आमकांच दाखयतात म्हुण लक्षांत हाडचें. आनी, आमकां कोणेय वोट दाखयलें जाल्यार, आमी अस्वस्थ जांवचें न्हय. आमी आमच्यो बर्यो करण्यो करीत रावचें. देवा कडल्यान आमकां ताचें इनाम मेळ्या बगर रावचें ना. ❋

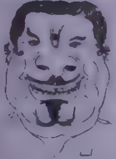


"शकटं पञ्चहस्तेन दशहस्तेन वाजिनम्।
हस्तिनं तु सहस्रेण देशत्यागेन दुर्जनम्।।"



एकल्यान पड्याबण्डिल्या (Cart) थकूनु पांच हत्तीयि (10 ft.) घोड्याला थकूनु धा हत्तीयि (20 ft.) हस्तेला थकूनु सहस्र हत्तीयि (2000 ft) दूर रब्बूका। जल्यारि दुर्जना खत्तिरि त्या देशूचि त्यागु कोर्का। (ये सग्ग एकल्याले जीवित नाशु कोर्चे तं)

स्स्पति - आर. के. प्रकाश, पळ्ळूर



Dr. P. N. N. सिंह
डॉ. प्रश्नु ना नरसिंह
SSLC, PDC, BSc., MBBS (3 times)

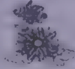
कुमारु : डॉक्टर, मक्का खूब अळसाय। रगत जांवका जातेलें। तजो ऊणावु म्हणु दिस्ता।

डॉक्टर - प्रश्नु ना, मार्कटा मुकारि रावल्यारि चांग मुम्बूरँ मेळतलीं। रगतय मेळतलें, मुम्बूरय ऊणे जात्तलें।

* * * *

सदानन्दु : डॉक्टर, सातूली चांग कोरचें काम त मक्का। जाल्यारि मिजेर एक फिलोसफर आसा। कसि हांव तें जनांक मनां करेयतोलो?

डॉक्टर : प्रश्नु ना, वखद दीन। कन्नान्तु दोनीय ताम्वडें फूल दवर्ल्यारि पूरो।



परणी म्हण्णी

- श्रीदेवी सुरेश प्रभु, कोच्ची

- पोट भर्लेल्यांक उपाश्यालि भूकॅ कॅळ्ना।
- पोट भर्लेल्याक धॅय्यॉतु फत्तोरु एत्ता।।
- पोट वट्टेरि घालूंक नज्ज।
- जीब अस्स जल्यारि पोट्टा भाग्य।
- कोणालेयि पोट्टाक मार्नु अस्सिलो खेळु चंगाक न्हयि।।

चेर्डुवांलि चित्रँ





कु. **श्रावणकृष्णा (5)**, कोच्चीचे एन. नविन नायक अनि सूर्यप्रिया हांगेलो सुपुत्रु।



आमगेली गती

- कु. अञ्जली किणी, कोच्ची

गोड-गोड उत्तर उल्लोवनु
मगलान खोंपताय पेसकाती
वेगळाले सुखान्तु, सुख सोड्डूक
दीना ती दुष्ट मती ।

चूकी जाल्ली कळता जल्यारीय
क्षमा मागूक ना प्राप्ती
मागतल्यांक क्षमा कोरूक जायना
ह्यी जाली आमगेली गती ।

हांव, तू आमगेले, तुमगेले
वण्टो घाल्नु हाडची रीती
गूण, मूल्य सोणु धावनु
आजि खंय पावली मानव जाती ।

आमगेले सग्ग नष्ट जाल्ले जल्यारि
तांगेले दुःखान्तु आमका प्रीती
वगळांले ऊणावु खोणु काणु
जाता व्हडि तृप्ती ।.

सग गुणय शेण्डून वरताय आमी
जाव्नु सुन्तु जालीली वाती
प्रकाशु घेवनु सूर्या गेल्लो
आनी मुकार केवल राती ।।



चुटको

- भक्ता आर. काजंगाड

नडारि पळ्यारी भक्ती
रोडार पळ्यारी जीवनमुक्ती

अव्सूलें मन्न दुकोवनक्काय - सुपारी

रामायण वच्चून बेसल्ले वसन्तक्का लगी सून लतान येव्नु संगीलें - "अम्मा एक गुड न्यूस अस्स, हांव गुर्भीणि तं म्होणु डोक्टरान संगील्यां, तीनि मास ।" वसन्तक्का निर्जुळी जल्लि । इत्ति म्हळ्यारि पाँच वर्ष जल्लिं व्हडीक जाव्नु । अतँ काला चेईवँ नवें? इत्ती संग्गूक ? रामायण वच्चूक आराम्भिल्ले मक्का चांग खवर दिल्लेले देवा तुक्का कोटि प्रणाम । दोनि तीनि दीस वच्चाकय वसन्तक्कान सुन्नेलगी संगीलें "धुवा ! तुक्का कळना दिक्कून संगता तं । ये वेळारी तुक्का अम्वो खवंचाक अनि दिस्तोलो । तक्का तं दुवाळो म्हणताय । इत्तेंय तस्सि दिसतजल्यारि अम्मा लगि संगूका ।" दीस तीनि चारि गेल्ले । सुन्नेन वसन्तक्का लगि संगीने । **"अम्मा मक्का अम्बो नक्का, कोम्बो पूरो ।"** वसन्तक्का इडभेट लगल्या गती जल्लि । भायर संगूक जत्तल्वे ?

कोंकणी - മലയാളം - English

- शैलेष कम्मत. एम., कोच्ची

पूतु - മകൻ/പുത്രൻ - Son
नत्तु - പേരക്കുട്ടി /പൗത്രൻ - Grandson
पोण्तु - പ്രപൗത്രൻ - Great grandson
शेण्तु-പ്രപൗത്രന്റെ പുത്രൻ- Son of great grandson
धूवँ - മകൾ/പുത്രി - Daughter
नात्ति - കൊച്ചുമകൾ/ പൗത്രി - Grand daughter
पोण्ति - പ്രപൗത്രി - Great grand daughter
शेण्ति - പ്രപൗത്രന്റെ പുത്രി - Daughter of great grand daughter



एन. बालकृष्ण भट (1947-1997) - के. अनन्त भट, कोच्ची

एन. बालकृष्ण भट कोच्चीचे सरस्वती बाई आनी एस. नरसिंह भट - हांगेलो सुपुत्रु जावनु 25-5-1947 तु जल्मलो। कोच्चि तिरुमल देवस्वं हाई स्कूळान्तु विद्याभ्यासु एस.एस.एल.सी. पर्यन्त प्राप्त केलो। कोच्चीचेचि आर. लक्ष्मण मल्या आनी मनोरमा हांगेली धूव एल. सुनिता बाई संगाति 26-6-1977 क तांचो विवाहु सम्पन्न जालो। ह्या दम्पतींक दोनि चेलिये चेर्डुवँ जालीं। 'धन्या फर्निचरस्' म्होणु कोच्चीन्तु आनि मगीरि 'उदया सेल्स एजन्सीस' म्होणु अंचिकमळ व्यापारु कोर्नु जीवन चलयिलें।

उद्योगु व्यापारु चलोवनु आसतनायि कोंकणी भाषा प्रचार सभा, कोच्चीचे सर्वप्रथम कोंकणी नाटक 1967 तु "वीर पाण्ड्य कट्टबोम्मन" हांतु पुदुक्कोटै रायाली बायल (राणी) जावनु तांगेलो अभिनयु व्होड प्रशंसेक पात्र जालो। त्या नाटकान्तु हांव रायु जाललों। त्या कालाक नाटकांतु दादल्यानी बायले वेषु घालनु अभिनयु कोर्का पडतालें। त्या नन्तर 1968 जनवरींतु प्रचार सभेचें दुसरें नाटक "भक्त मार्कण्डेया"तु आनी दोनि बायले वेष (पार्वती आनी करवञ्जी) रूपान "कोणाक लक्षण सांगूका?" गीतान रंगमंचारि नांचून अभिनयु केललो जनप्रिय जालो। नाटकांतु स्त्री वेषधारी बालकृष्ण भटालो ताळो (स्वरु) आनी अभिनयाचे हाव-भाव थेट बायलांवरि, ग्रामीण करवंजीचे नृत्या वेळारि आंगाचें चलन इत्यादि चोवनु आमगेले समाजांतुल्यो बायलो असूया पावतालीं। 1981 वर्सां मध्ये बेंगळूराक खेळयिले नाटक स्पर्धेतु प्रचार सभेन अवतरण केलेल्या "बायल एक दुःख" नाटकान्तु तो पोलीस जावनु, प्रकाश पै (एल. जी. पै मामालो सुपुत्रु) इत्यादि कलाकारानी भागु घेवनु त्या नाटकाक पुरस्कारु प्राप्त केललो।



नाटकान्तु बायलांगेले अभिनयापशि उत्कृष्ट जावनु आपण एकु दादलो तँ अभिनयु करता म्हुंण प्रेक्षकांक कळयिना तसलो स्त्रीपात्राभिनयु आस्सीलो दिं. बालकृष्ण भटालो।

असलो एकु विशिष्ट कलाकार, कोंकणीचो मोगी, बालकृष्ण भट्टु 4-2-1997 तारिकेक स्वर्गवासी जाल्लो।

जीविताचे मूल्य !!!

- गोश्रीपुरं हरिकुमार

स्वामी ! जीविताचे मूल्य इत्तें ?

एकु फत्तोरु दित्ता। इत्ते मोल्लाक काडतोलो म्होणु तीनि कडे निंवगीयि, अनि यो !

ब्यारेलि

यो फत्तोर मक्का इत्याक? मगीरि, संतालो दिक्कून शें रुपय दित्ता...

भंगरा व्यापारि

हक्का धा सासु दिव्यात ! मगीरि, संत दिक्कून एकु लक्षु दित्ता....

वज्रा व्यापारि

अरे रे रे रे ..... ह्यें माणिक्य !! लोकान्तु एकचि अस्पुचे !! हज्जे मोल संगूक कोणाचान्नयि साध्य न्हय !!!

कळ्ळे वे पुत्ता ? ह्ये लेक्कान तँ जीविताचे मूल्य !!! एकेकलाकयि तंगतंगेले काम, दामु अनि ज्ञाना अनुसृत तँ ते अस्तलें। मूल्य कोळचो व्यक्ति जीवित चाँ जाव्नु मुक्कारि व्होर्तोलो। संतोषु, समाधान पांवतोलो।

Reg. No. KERKON/2012/45527
Vol. No. 4 Issue No. 11
Rs.5/-

Registered - No. KL/EKM/732/2015-17
Licence No. KL/CR/EKM/WPP.04/2015-17
Licensed to Post without Prepayment

SPANDAN

Published by : KERALA KONKANI ACADEMY, KOCHI 10th November 2015

Printed and published by Suresh A. Shenoi on behalf of Kerala Konkani Academy and Printed at M/s. Prakash Process, Srinivasa Mallan Road, Ernakulam, Kochi - 682 035, Ph : 2350960 and Published at 8/28, Santheri,1st Floor,Opp. M.S.C. Bank Ltd., Cherlai Road, Kochi - 682002. Editor - Suresh A. Shenoi